

P. 1, 3, 12. कीर्तिम् BHATT. 7, 69. पात bewahrt u. s. w. TRIK. 3, 3, 169. MED. I. 32. — 2) beobachten, merken, aufpassen auf; beaufsichtigen, beachten, halten, befolgen: के धासिमग्ने अर्न्तस्य पाति RV. 5, 12, 4. उ-कथा 18, 4, 19, 2. 82, 2. पासि त्यजसा मर्तमहः 8, 3, 1. पाति यच्छरणां सूर्यस्य 3, 5, 5. पथ एकः पीपाय तस्करो यथा एव वेद निधीनाम् 8, 29, 6. र-जस्पात्यसौ 5, 47, 3. स्रुतं स पीपायहस्य वृक्षः 5, 12, 6. विष्णुर्वै यज्ञस्य ड-रिष्टं पाति वरुणः स्विष्टम् AIT. BR. 3, 38. med.: व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशो RV. 9, 70, 4.

— अघि s. अघिय. ०पा.

— अग्नि behüten; beobachten: विश्वान्यव्यज्ञां अग्निपाति RV. 3, 9, 6. यो वामदेवो अग्नि पाति चित्तिभिः VALAKH. 9, 3. RV. 10, 1, 3. अग्निष्ठाभि पातु मन्त्रा स्वस्त्या VS. 13, 19.

— नि beschützen, behüten: विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरिन् RV. 7, 38, 3. 3, 7. यो वनुष्यतो निपाति 1, 15, 40, 6. 1, 106, 7. 4, 53, 3. नि पातं वेदेसा वयः 8, 76, 2. कदा च न प्र युच्छस्युभे नि पासि जन्मनी VALAKH. 4, 7. be- beobachten, überwachen: इमे शंसं वनुष्यतो नि पाति RV. 7, 36, 19. अग्नि वि- श्वां दुर्मतिं धन्विपासि 4, 11, 6. यः क्रत्वा निपाति वृजिनानि विश्वां 1, 73, 2. AV. 9, 10, 23. beobachten, wahren: स्रुतस्य पदे कवयो नि पाति RV. 10, 5, 2. तां श्रोतमानां स्वयं मनीषामृतस्य पदे कवयो नि पाति 10, 177, 2.

— निस् behüten vor (abl.): येना निरुहसो यूयं पाथ नेथा च मर्त्यमति द्विषः RV. 10, 126, 2. Diese Praep. scheint übrigens durch das folg. नेथ oder ein im Sinne liegendes पिपतं veranlasst zu sein.

— परि rāngs behüten, — beschützen, bewahren: उभे रोदसी परि पा- सतो नः RV. 7, 34, 23. आयुर्विश्वायुः परि पासति वा 10, 17, 4. पुमान्पुमीसं परि पातु विश्वतः 6, 75, 14. 71, 3. तं परि पातो अहंसः 1, 136, 5. 143, 8. VS. 26, 14. AV. 6, 110, 2. 8, 2, 26. तेन नः परिपाहि MBh. 1, 8413. भग- वान्परिपाति दीनान् BHĀG. P. 4, 9, 17. 5, 8, 21. परिपाहि वसुधराम् MBh. 12, 1203. विश्वम् BHĀG. P. 2, 6, 31. DEV. 11, 32. अनुशासनम् bewahren, auf- recht erhalten BHĀG. P. 1, 7, 53. धर्मेण धर्मः परिपाति सेतुम् 3, 1, 36. — Vgl. परिपाण.

— प्र behüten, bewahren vor (abl.): कल्किः कलेः कालमलात्प्रपातु BHĀG. P. 6, 8, 17.

4. पा (= 3. पा) adj. (पा [!] पातरि MED. p. 1) am Ende eines comp. bewahrend, behütend, schirmend; s. अपान°, अप्रीत°, आयुष्पा, स्रुत°, क्रतु°, गो°, चतुष्पा, हृदिष्पा, तनू°, तपुष्पा, निधि°, निधिक्ष°, परस्पा, प्राण° u. s. w. und auch 2. प.

5. पा (पै), पायति ausdorren DHĀTUP. 22, 23. पायति धान्यमातपेन DUR- GAD. bei WEST. — CAUS. पाययति P. 7, 3, 37, Sch.

पाशन s. पासन.

पांसु und die damit zusammengesetzten und davon abgeleiteten Wör- ter s. u. पांसु.

पांसुन 1) adj. am Ende eines comp. besudeind, vernehrend; = हृषकं TRIK. 3, 1, 10. कुल° Hip. 1, 39. MBh. 3, 2788. 7, 9141 (°पाशन, sic). R. 2, 82, 13. 3, 51, 25. तत्रिय° 1, 56, 4 (°पाशन). 3, 40, 16. रात्स° Hip. 4, 12. वृक्षि° (so ist zu lesen) MBh. 7, 6786. f. ३: कुल° HARIV. 4619. DAÇ. 2, 71. R. 2, 90, 7. 37, 21. 48, 20. R. GOAR. 2, 45, 26. आ (wohl fehlerhaft) MBh. 3, 15978. R. GOAR. 2, 37, 18. 76, 3. — 2) n. = अवनज्ञा Verachtung TRIK. 4, 1, 127. — Der Form nach ein nom. ag. oder act. von पांसय्,

welches zu पांसु gehört.

पांसव (von पांसु) 1) adj. aus Staub gebildet: (वाताः) तमः पांशवमैरयन् BHĀG. P. 3, 19, 18. — 2) m. oxyt. patron. Bildung ÇAT. BR. 2, 3, 2, 1. 3. — 3) पांशव m. eine Art Salz (vgl. पांसुज) RĀGĀN. im ÇKDr.

पांसव्य adj. zu पांसु VS. 16, 45.

पांसिन् adj. = पांसन im voc. f. कुलपांसिनि R. 2, 73, 5; wohl nur feh- lerhaft für °पांसनि.

पांसु (in den späteren Schriften meist पांसु geschrieben) URĀDIS. 1, 28. m. 1) zerfallende Erde, Staub, Sand AK. 2, 8, 2, 66. TRIK. 2, 8, 57. H. 970. MED. Ç. 10. HALĀJ. 2, 288. nur ausnahmsweise sg. शिला भूमिरश्मा पांसुः AV. 12, 1, 26. 7, 109, 2. TB. 2, 6, 10, 2. ĀÇV. ÇR. 4, 4. GRHJ. 2, 8, 4, 5. KAUC. 27. 83. KĀTJ. ÇR. 6, 2, 10. NIR. 12, 19. कृत्त° GOBH. 4, 7, 4. पांसु- गुपिठत MBh. 3, 2338. 2514. 2559. 5, 5182. सुतैरपि पांसुभिः 13, 1468. 4116. 14, 150. DRAUP. 9, 13. DAÇ. 1, 34. R. 2, 80, 9. 18. R. GOAR. 2, 9, 8. 6, 94, 2 (त्रितिपांसुभिः). SUÇR. 1, 67, 5. 93, 11. 113, 4. RAGH. 2, 2. RT. 1, 113. VARĀH. BRH. S. 3, 59. 29, 21. 92, 11. 96, 13. SÜRJAS. 13, 22. AMAR. 48. SĀH. D. 64, 16. °समूहन (अनिल) M. 4, 102. °वर्ष ein Regen von Staub, her- abfallender Staub 115. ADDB. BR. 6, 8 in Ind. St. 1, 40. JĀLĀ. 1, 150. VA- RĀH. BRH. S. 22, 6. °निपात dass. 3, 92, 21, 25. पांसुत्कार dass. 22, 4. °प्र- दान BURN. Intr. 131, N. 2. 374, N. 1. 377, N. 1. °लोष्टकैः R. 3, 37, 18. शोणितं यावतः पांसुसंगृह्णाति महीतलात् Sandkörner M. 4, 168. 11, 207. — 2) Dünger MED. VIÇVA bei UGĀVAL. zu URĀDIS. 1, 28. — 3) eine best. Pflanze, = पर्पट; vgl. रेणु. — 4) eine Art Kampfer RĀGĀN. im ÇKDr. — 5) Landbesitz WILSON.

पांसुक (von पांसु) 1) m. pl. Staub: ध्रुवं युधि कृतास्तेन भक्तियुष्मान् पां- प्रुकान् MBh. 3, 640. — 2) f. आ a) ein menstruirendes Weib. — b) Pan- danus odoratissimus WILSON.

पांसुकासीस (पांसु + का) n. Eisenvitriol RĀGĀN. im ÇKDr. (पांसु°). पांसुकुली (पांसु + कुल Menge) f. Hauptstrasse HAR. 122 (पांसु°). पांसुकूल (पांसु + कूल) n. Kehrriehausen und die auf Kehrriehausen aufgelassenen Lumpen, aus denen sich die buddhistischen Geistlichen ihre Gewänder zusammennähen, VJUTR. 201. °कूलिकी solche Gewänder tragend 34. BURN. Intr. 305. fg. °कूलसीवन n. N. pr. des Ortes, an dem ÇĀKJAMUNI sich sein geistliches Gewand nähete, LALIT. 237. Die Calc. Ausg. 334, 1, 2 nennt das Gewand पाण्डुकूल und den Ort °सीवन, woraus jenes पांसुकूल (so wird geschrieben) und °सीवन entsteht zu sein scheinen. Nach TRIK. 2, 2, 2 ist पांसुकूल n. eine Rechtsurkunde, die nicht auf den Namen einer bestimmten Person geschrieben ist.

पांसुकृत (पांसु + कृत) adj. bestaubt LALIT. ed. Calc. 321, 9 (पांसु°). पांसुतार (पांसु + तार) = पांसुज NIGH. PR. (पांसु°). पांसुचवर (पांसु + च°) n. Hagel ÇABDAM. im ÇKDr. (पांसु°). पांसुचन्दन (पांसु + च°) m. Bein. ÇIVA'S TRIK. 1, 1, 48. H. Ç. 42. Verz. d. Oxf. H. 191, a, 3. Ueberall पांसु°.

पांसुचामर (पांसु + चा°) m. 1) = धूलिगुच्छक (धूलिपुच्छ H. a. n.). — 2) = ह्रुवञ्चिततटीभू. — 3) = वर्धापक. — 4) = प्रशंता. — 5) = पुरोटि. H. an. 5, 41. 42. MED. r. 305. — 6) = पटवास ĠĀTĪDH. im ÇKDr. — पांसु° geschrieben.

पांसुज (पांसु + ज) n. eine Art Salz RATNAM. im ÇKDr. (पांसु°).